Research Inspiration
(Peer-reviewed, Open Access and indexed)
Journal home page: www.researchinspiration.com
ISSN: 2455-443X, Vol. 10, Issue-II, March 2025

ब्रह्मांड की उत्पत्तिः प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण और आधुनिक वैज्ञानिक समझ (Cosmogenesis in Geography: Ancient Indian Insight and Modern Scientific Understanding)

Praveen Kaushik[a,*], **Vinita Kashyap**[b,**]

[a]*Assistant Professor (Geography), Geography, Govt. Naveen College Saragaon, Janjgir, Champa, Shaheed Nandkumar Patel Vishwavidyalaya, Raigarh, Chhattisgarh, (India).*

[b]*Research Scholar (Geography), Government Digvijay Post Graduate College Rajnandgaon, Hemchand Yadav University, Durg Chhattisgarh, (India).*

KEYWORDS

ब्रह्मांड की उत्पत्ति, प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण, आधुनिक वैज्ञानिक समझ, बल्कि दार्शनिक और आध्यात्मिक अवधारणा

ABSTRACT

भौगोलिक दृष्टिकोण से ब्रह्मांड की उत्पत्ति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि सृष्टि की शुरुआत केवल भौतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि दार्शनिक और आध्यात्मिक अवधारणाओं से भी जुड़ी है। छांदोग्य उपनिषद में वर्णित "सत" की धारणा और "तत्त्वमसि" जैसे वाक्य ब्रह्म और आत्मा के एकत्व को स्थापित करते हैं, जिससे सृष्टि के उद्भव का आध्यात्मिक पक्ष उजागर होता है। अग्नि, जल, और अन्न जैसे मूलभूत तत्वों के माध्यम से भौगोलिक विविधता की उत्पत्ति समझाई जाती है। अद्वैत वेदांत में ब्रह्म की अपरिवर्तनीयता और यूनानी दार्शनिक प्लोटिनस के "The One" के सिद्धांत में क्रमिक प्रकट रूप की तुलना, स्थायित्व और परिवर्तन की अवधारणाओं को भूगोल में जोड़ती है। आधुनिक विज्ञान में बिग बैंग सिद्धांत और बिग हिस्ट्री जैसे विचार, ऊर्जा और पदार्थ के विस्तार से भूगोलिक संरचनाओं की उत्पत्ति को भौतिक रूप से स्पष्ट करते हैं। अंततः यह दृष्टिकोण सामने आता है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांत, दोनों ही भूगोल में ब्रह्मांडीय सृष्टि को समझने के लिए परस्पर पूरक हैं।

1. भूमिका

ब्रह्मांड की उत्पत्ति सदियों से मानव जिज्ञासा का केंद्र रही है। यह विषय केवल दर्शन या धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि भूगोल जैसे वैज्ञानिक अनुशासन का मूलभूत आधार भी बन चुका है। भूगोल, जो पृथ्वी की संरचना, उसकी गतिशीलता, अंतरिक्ष में उसकी स्थिति तथा पर्यावरणीय अंतःक्रियाओं का अध्ययन करता है, वह ब्रह्मांड के उद्भव और विकास की व्याख्या के बिना अधूरा है। सृष्टि की शुरुआत और ब्रह्मांड की रचना संबंधी प्रश्न भूगोल की अंतरिक्ष–सम्बंधी शाखाओं जैसे खगोल भूगोल और भौतिक भूगोल में गहराई से अध्ययन किए जाते हैं।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों, विशेषकर उपनिषदों में, सृष्टि के आरंभ को एक गहन वैदिक दृष्टिकोण से देखा गया है। यह दृष्टिकोण दार्शनिक होते हुए भी भौगोलिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जहाँ ब्रह्मांड के मूल तत्त्वों की उत्पत्ति, उनके रूपांतरण, तथा स्थान–काल की धारणा को समझने का प्रयास किया गया है। उदाहरणस्वरूप, छांदोग्य उपनिषद (6.2–6.3) में 'सत' (शुद्ध अस्तित्व) से सृष्टि की उत्पत्ति का विवरण, ब्रह्मांडीय विस्तार के उन रहस्यों को उजागर करता है, जिन्हें आज वैज्ञानिक ''बिग बैंग थ्योरी'' द्वारा समझने का प्रयास कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर, आधुनिक खगोलशास्त्र, विशेषकर Expanding Universe Theory Big और Bang Model, इस दृष्टिकोण को पूर्ण

* **Corresponding author**
E-mail: kaushikpraveen90@gmail.com (Praveen Kaushik). https://orcid.org/0009-0000-5378-1603
DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v10n2.07
Received 20th Feb. 2025; Accepted 15th March 2025
Available online 30th March 2025
2455-443X /©2025 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

रूप से भौतिक तथा गणनात्मक आधार पर प्रस्तुत करता है। वैज्ञानिक यह मानते हैं कि लगभग 13.7 अरब वर्ष पूर्व एक अत्यंत सघन बिंदु से ब्रह्मांड का विस्तार प्रारंभ हुआ और इससे काल, अंतरिक्ष, ऊर्जा और पदार्थ का उद्भव हुआ।

इस लेख का उद्देश्य है कि प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित ब्रह्मांडीय सृष्टि प्रक्रिया और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के बीच एक तुलनात्मक अध्ययन किया जाए विशेषकर भूगोल की दृष्टि से। इससे न केवल भौगोलिक चेतना का ऐतिहासिक विस्तार समझा जा सकेगा, बल्कि यह भी स्पष्ट होगा कि किस प्रकार प्राचीन और आधुनिक विचारधाराएँ एक साझा भूगोलीय आधार पर खड़ी हैं। यह लेख इस दृष्टिकोण से लिखा गया है कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति को केवल एक दार्शनिक विमर्श न मानकर, इसे भूगोल के वैचारिक स्तंभ के रूप में देखा जाए। इसी दृष्टिकोण से, हम आगे विभिन्न खंडों में प्राचीन उपनिषदों के संदर्भ, यूनानी दार्शनिकों के दृष्टिकोण, और आधुनिक विज्ञान की व्याख्याओं को एक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में एकत्र करेंगे।

2. उद्देश्यः प्राचीन ग्रंथों और आधुनिक विज्ञान में ब्रह्मांड की उत्पत्ति का भूगोल के दृष्टिकोण से विश्लेषण (Analysis of the Origin of the Universe in Ancient Texts and Modern Science from a Geographical Perspective)

(1). ब्रह्मांड की उत्पत्ति को भौगोलिक दृष्टिकोण से देखने की परंपरा को समझना, जिसमें प्राचीन भारतीय विचारधारा और आधुनिक विज्ञान दोनों की व्याख्याएं शामिल हैं।

(2). उपनिषदों एवं वेदांत के विचारों की विवेचना करना, ताकि यह जाना जा सके कि ब्रह्म, तत्व और सृष्टि के संबंध में भौगोलिक अर्थ कैसे निहित हैं।

(3). आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों जैसे बिग बैंग और खगोलीय विकास को भूगोल के परिप्रेक्ष्य से स्पष्ट करना, जिससे सृष्टि के प्रारंभ से लेकर पृथ्वी के स्वरूप तक की यात्रा समझी जा सके।

(4). प्राचीन और आधुनिक दृष्टिकोणों के बीच संवाद को स्थापित करना, ताकि यह दिखाया जा सके कि दोनों ही विचारधाराएं किस प्रकार भूगोल के साझा सिद्धांतों पर आधारित हैं।

(5). भौगोलिक अवधारणाओं को धार्मिक व वैज्ञानिक मतों से जोड़कर प्रस्तुत करना, जिससे यह उजागर हो सके कि ज्ञान की ये शाखाएं एक–दूसरे को कैसे पूरक बनाती हैं।

(6). वर्तमान और भविष्य की अध्ययन दिशा के लिए एक वैचारिक आधार प्रदान करना, जिससे ब्रह्मांड की उत्पत्ति का अध्ययन केवल वैज्ञानिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक संदर्भों में भी किया जा सके।

3. प्राचीन भारतीय भूगोल और ब्रह्मांड की उत्पत्ति (Ancient Indian Cosmogenesis in the Context of Geography)

3.1. वैदिक ग्रंथों में भूगोल की उपस्थिति (Presence of Geography in Vedic Texts)

भारतीय भूगोल की प्राचीन परंपरा केवल पृथ्वी तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह ब्रह्मांड की संरचना, अंतरिक्ष, तत्त्वों और समय की धारणा तक विस्तृत रही है। विशेषकर वैदिक ग्रंथों में सृष्टि की उत्पत्ति से संबंधित सूक्तों में खगोलीय अवधारणाओं के बीज स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त (10.129) में यह वर्णन है कि प्रारंभ में न तो सत् था, न असत; न आकाश था, न दिशाएँ; केवल एक अव्यक्त तत्त्व था जो श्वासहीन होकर स्वयं में स्थित था (Jamison & Brereton, 2014)।

यह सूक्त न केवल दार्शनिक भाव लिए हुए है, बल्कि यह

ब्रह्मांडीय उत्पत्ति के उस मौलिक क्षण को इंगित करता है जिसे आधुनिक विज्ञान में "सिंगुलैरिटी" (Singularity) कहा गया है, एक ऐसा बिंदु जहाँ समय, स्थान और पदार्थ का कोई अस्तित्व नहीं था (Kragh, 2007)। इस सूक्त में "तपः" अर्थात ऊष्मा से सृष्टि के उत्पन्न होने का वर्णन मिलता है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बिग बैंग के बाद उत्पन्न उच्च तापमान के अनुरूप है।

3.2. उपनिषदों की सृष्टिविज्ञान धारा (Cosmological Thought Stream in the Upanishads)

छांदोग्य उपनिषद (6.2–6.3) में ऋषि उद्दालक आरुणि के माध्यम से बताया गया है कि सृष्टि की उत्पत्ति 'सत' से हुई, और यह सत् स्वयं सृष्टि में प्रविष्ट होकर प्रत्येक प्राणी का आत्मतत्त्व बना। एकनाथ ईश्वरन (2007) के अनुसार, यह दृष्टिकोण इस ओर संकेत करता है कि समस्त ब्रह्मांड एक ही परम सत्ता से उद्भूत हुआ है, और वह सत्ता स्वयं ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है (Easwaran, 2007, p. 133)। यह विचार भौगोलिक दृ दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह 'स्थान' (space) की धारणा को केवल भौतिक नहीं, बल्कि आत्म–आधारित बनाता है। प्रत्येक वस्तु में एक जैसी सत्ता का होना, भूगोल की एकरूपता और अंतर–सम्बद्धता की अवधारणा से मेल खाता है।

3.3. तत्त्वमीमांसा और पंचतत्त्व (Metaphysics and the Five Elements)

प्राचीन भारत में सृष्टि की उत्पत्ति को पंचतत्त्व (अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश) से जोड़ा गया है। यह पंचतत्त्वीय संरचना केवल दार्शनिक नहीं है, बल्कि यह पर्यावरणीय भूगोल की प्रारंभिक अवधारणा है, जहाँ प्रत्येक तत्त्व एक पारिस्थितिक भूमिका निभाता है (Capr, 1982)। यह दृष्टिकोण आज के इकोजियोग्राफी (Eco geography) से अत्यंत निकट है।

तैत्तिरीय उपनिषद में 'अन्नम ब्रह्म' की घोषणा यह बताती है कि अन्न (अर्थात पृथ्वी पर उत्पादित खाद्य) ही अंतिम तत्त्व है, जो अन्य तत्त्वों से क्रमशः उत्पन्न होता है (Taittiriya Upanishad, II-1–5)। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भूगोल में भौगोलिक चक्र (जैसे जलचक्र, अग्नि ऊर्जा, वायुमंडल आदि) की समझ विद्यमान थी।

4. यूनानी और भारतीय दृष्टिकोण में समानताएँ (Comparative Cosmology: Indian and Greek Perspectives)

4.1. प्लेटो, अरस्तू और 'प्राकृतिक व्यवस्था' (Plato, Aristotle, and the 'Natural Order')

प्राचीन यूनानी दार्शनिकों का मानना था कि ब्रह्मांड एक तार्किक और क्रमबद्ध संरचना है। प्लेटो ने अपनी रचना ज्पउंमने में सृष्टि को एक ईश्वरीय हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप मान्यता दी, जहाँ ब्रह्मांड को एक 'पूर्ण और सौंदर्ययुक्त जीव' के रूप में देखा गया (Cornford, 1937)। इसके अनुसार, ब्रह्मांड का निर्माता (Demiurge) अराजक पदार्थ को एक सुव्यवस्थित रूप में ढालता है।

अरस्तू (Aristotle) ने भूगोल और खगोलशास्त्र को जोड़ते हुए कहा कि पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र है, और इसके चारों ओर स्वर्णमंडलीय गोले हैं जिन पर ग्रह और नक्षत्र स्थित हैं (Grant, 1996)। यह विचार स्थानीय स्थिरता और केंद्रबिंदु की अवधारणा को बल देता है, जो भारतीय सिद्धांतों से अलग है, जहाँ संपूर्ण आकाश ही दिव्यता का क्षेत्र माना गया है।

4.2. भारतीय दृष्टिकोण में 'ब्रह्म' का चरम वैचारिक विस्तार (The Ultimate Conceptual Expansion of 'Brahman' in the Indian Perspective)

जहाँ यूनानी ब्रह्मांड का विश्लेषण बाह्य आकृति और गतिकी पर केंद्रित रहा, वहीं भारतीय परंपरा में ब्रह्मांड की उत्पत्ति अद्वैत ब्रह्म से मानी गई। छांदोग्य उपनिषद के 6.2. 1 में सत् की उत्पत्ति को ब्रह्मांड की जड़ माना गया है, जहाँ कहा गया है कृ "सदेव सोम्य इदमग्र आसीत्

एकमेवाद्वितीयम्।" (Radhakrishnan, 1953)।

प्लोटिनस जैसे यूनानी नव–प्लेटोनिक दार्शनिकों ने भी 'The One' की धारणा दी, जहाँ संपूर्ण सृष्टि एक उच्चतम सत्ता से प्रवाहित होती है। यह विचार अद्वैत वेदांत के उस तर्क से मेल खाता है, जहाँ ब्रह्म से सब कुछ उद्भूत होता है, लेकिन ब्रह्म में कोई परिवर्तन नहीं होता (Armstrong, 1966)। इस प्रकार, दोनों परंपराओं में यह समान बिंदु देखा जा सकता है कि सृष्टि किसी उच्च सत्ता या मौलिक तत्त्व से उत्पन्न होती है, चाहे वह ब्रह्म हो या जेम व्दम।

4.3. भूगोल की दृष्टि से तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis from a Geographical Perspective)

भूगोल के सन्दर्भ में, यूनानी और भारतीय दृष्टिकोणों में मूल अंतर यह है कि यूनानियों ने पृथ्वी की अवस्थिति और गोलाकारता पर बल दिया, जबकि भारत में भूगोल को सृष्टि के अंतर्संबंध के रूप में देखा गया। यूनानी खगोलशास्त्र की सबसे बड़ी देन पृथ्वी की परिधि का अनुमान था, जो एराटोस्थनीज़ (Eratosthenes) द्वारा किया गया था (Bowler, 2001)।

वहीं भारतीय विद्वान जैसे आर्यभट और वराहमिहिर ने सौर मंडल की गति को सृष्टि के चक्र में जोड़ा। आर्यभट ने लिखारू "स्वयं पृथ्वी ही घूमती है, जिससे सूर्य का उदय और अस्त प्रतीत होता है।" (Aryabhata, 499 AD; Sarṁ, 2008) इस तरह, यूनानी भूगोल स्थूल रूप से पृथ्वी की स्थिति को लक्ष्य करता है, जबकि भारतीय भूगोल सूक्ष्म रूप से पृथ्वी और ब्रह्मांड के संबंध को स्पष्ट करता है।

5. आधुनिक विज्ञान की भूमिकारू बिग बैंग और स्थान–काल की अवधारणा (Role of Modern Science: Big Bang and the Concept of Space & Time)

आधुनिक विज्ञान में ब्रह्मांड की उत्पत्ति को समझने के लिए सबसे व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त सिद्धांत है, बिग बैंग थ्योरी (Big Bang Theory)। इस सिद्धांत के अनुसार, लगभग 13.8 अरब वर्ष पूर्व सम्पूर्ण ब्रह्मांड एक अत्यधिक सघन और ऊष्मायुक्त बिंदु से उत्पन्न हुआ, जिसे "सिंगुलैरिटी" कहा जाता है। इस विस्फोट के साथ ही न केवल द्रव्य और ऊर्जा का, बल्कि स्थान (space) और काल (time) का भी जन्म हुआ (Lemaître, 1927)। इसलिए यह घटना केवल भौतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय भूगोल की आधारशिला है।

जॉर्ज लेमैत्रे (Georges Lemaître) ने 1927 में यह विचार प्रस्तुत किया जिसे उन्होंने "प्राइमल एटम" या "कॉस्मिक एग" कहा। उनके अनुसार, ब्रह्मांड की संपूर्ण ऊर्जा एक अत्यंत सूक्ष्म बिंदु में समाहित थी, जो एक क्षण विशेष में विस्फोटित हो गई। इस क्षण के साथ ही अंतरिक्ष और समय की धुरी का भी आरंभ हुआ कृ जिसे आइंस्टीन ने "स्पेस–टाइम कंटिन्युअम" के रूप में परिभाषित किया (Einstein, 1916)। यह बिग बैंग सिद्धांत ब्रह्मांडीय भूगोल की उन मूलभूत अवधारणाओं को स्पष्ट करता है जो स्थान, दूरी, दिशा, और गति से जुड़ी होती हैं।

यह विचार कि स्थान और काल ब्रह्मांडीय रचना के साथ उत्पन्न हुए, वैदिक चिंतन की उस धारणा से साम्यता रखता है जहाँ 'सत' के प्रकट होते ही सृष्टि के विभिन्न तत्व (जैसे अग्नि, जल, वायु) प्रकट होते हैं और ब्रह्म उन सभी में प्रवेश करता है (Easwaran, 2007)। छांदोग्य उपनिषद (6.2.1–6.3.4) में यह विचार अत्यंत स्पष्टता से प्रकट होता है।

सिंथिया ब्राउन (2007) ने अपनी कृति Big History: From the Big Bang to the Present में लिखा है कि बिग बैंग एक ऐसी अविस्मरणीय घटना थी जिसने समय, स्थान, द्रव्य, ऊर्जा, और गति की दिशा को जन्म दिया। वे लिखती हैं, "ब्रह्मांड एक अत्यंत सघन बिंदु से विस्फोट के

साथ फैलने लगा, और उसी के साथ ही स्थान और काल की उत्पत्ति हुई" (Brown, 2007, p. 4)। आज भी यह विस्तारशील गति जारी है, और आकाशगंगाएँ निरंतर एक–दूसरे से दूर जा रही हैं, जो ब्रह्मांड की गतिकीय भूगोल की पुष्टि करता है।

इस वैज्ञानिक सिद्धांत के भौगोलिक निहितार्थ व्यापक हैं। जिस तरह भूगोल पृथ्वी के स्थानिक स्वरूप, दिशा और गति को समझता है, उसी प्रकार आधुनिक खगोलशास्त्र ब्रह्मांड के विस्तार को भूगोल की ही ब्रह्मांडीय शाखा (Cosmo geography) के रूप में स्थापित करता है। इस प्रकार बिग बैंग केवल भौतिक नहीं, बल्कि स्थान–काल का भौगोलिक सृजन है, एक ऐसा प्रतिमान जिससे न केवल अंतरिक्ष की रचना, बल्कि उसमें स्थित पृथ्वी की स्थिति और संरचना को भी समझा जा सकता है।

जब हम इस सिद्धांत की तुलना प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण से करते हैं, तो स्पष्ट होता है कि दोनों ही परंपराएं ब्रह्मांड की उत्पत्ति को एक स्रोत से जोड़ती हैं, जहाँ से समय और स्थान की शुरुआत होती है। वैदिक 'सत' और आधुनिक 'सिंगुलैरिटी' एक–दूसरे के दार्शनिक पूरक प्रतीत होते हैं। दोनों में ही सृष्टि एक बिंदु से आरंभ होती है और विस्तार की ओर अग्रसर होती है, जो भूगोल की स्थायी प्रकृति का प्रमाण है।

आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से ब्रह्मांड की उत्पत्ति केवल एक खगोलीय घटना नहीं है, बल्कि भौगोलिक वास्तविकता की स्थापना है। समय और स्थान की यह उत्पत्ति वह आधारशिला है जिस पर पृथ्वी, जीवन और मानव सभ्यता की समग्र संरचना टिकी हुई है। यही कारण है कि आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान को केवल भौतिकी की नहीं, बल्कि भूगोल की भी मूलभूत शाखा माना जाना चाहिए।

6. तुलनात्मक अध्ययनः उपनिषद बनाम आधुनिक विज्ञान (Comparative Study: Upanishads vs Modern Science)

6.1. एक से अनेक की धारणा (Concept of One to Many)

प्राचीन भारतीय उपनिषदों में ब्रह्मांड की उत्पत्ति की व्याख्या में एक अद्वितीय दार्शनिक दृष्टिकोण निहित है, जो "एक से अनेक" की अवधारणा पर आधारित है। छांदोग्य उपनिषद (6.2.1–6.3.4) में यह स्पष्ट किया गया है कि सृष्टि का आधार 'सत' (सच्चिदानन्द) है, जो एक निराकार और समग्र सत्ता के रूप में संपूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त है। इस सत् से ही विभिन्न तत्वों और नाम–रूपों की उत्पत्ति होती है, अर्थात् एकत्व से बहुलता की प्रक्रिया शुरू होती है (Easwaran, 2007)। यह अवधारणा न केवल आध्यात्मिक है, बल्कि इसमें एक गहन भूगोलिक अर्थ भी निहित है, क्योंकि यह सृष्टि के विस्तार और विभाजन को स्थानिक दृष्टि से समझने का प्रयास करती है।

6.2. प्रवेश और विस्फोट की तुल्यता (Analogy between Entry and Explosion)

आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से, ब्रह्मांड की उत्पत्ति बिग बैंग थ्योरी द्वारा समझाई जाती है, जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्मांड एक अति–सघन बिंदु से फैलना शुरू होता है (Lemaître, 1927)। इस विस्फोट में न केवल द्रव्य और ऊर्जा का विस्तार होता है, बल्कि स्थान और काल भी उत्पन्न होते हैं। इस प्रक्रिया को ब्रह्मांडीय भूगोल के सन्दर्भ में देखा जाए तो यह सृष्टि के विस्तार और विभाजन की एक प्रारंभिक क्रिया है, जो ब्रह्मांड को उसके मौजूदा रूप में आकार देती है।

इस विस्फोट की प्रक्रिया में, उपनिषदों में वर्णित 'सत' की प्रवेश की अवधारणा से साम्य देखने को मिलता है। जहां उपनिषदों में सत् को सभी तत्वों में प्रवेश करने वाला माना गया है, वही बिग बैंग थ्योरी में वह बिंदु और ऊर्जा है जिससे सृष्टि फैली है। दोनों ही दृष्टिकोण एक केंद्र बिंदु से उत्पत्ति की बात करते हैं, जहां से बहुलता, विस्तार और

भौतिक जगत की विविधता निकलती है (Brown, 2007)।

6.3. भौगोलिक दृष्टिकोण से दोनों सिद्धांतों की संगति (Harmony of Both Theories from a Geographical Perspective)

भूगोल के संदर्भ में, उपनिषदों और आधुनिक विज्ञान दोनों ही ब्रह्मांड की संरचना और विस्तार को समझने के लिए स्थान, गति, और समय की अवधारणाओं का उपयोग करते हैं। उपनिषदों में, ब्रह्मांडीय तत्वों (अग्नि, जल, वायु आदि) का विस्तार और व्याप्ति एक दार्शनिक भूगोल प्रस्तुत करती है, जो प्रकृति और सृष्टि के बीच संबंध को दर्शाती है (Easwaran, 2007)। आधुनिक भूगोल में, विशेष रूप से खगोलिक और ब्रह्मांडीय भूगोल की शाखा में, बिग बैंग सिद्धांत ब्रह्मांड के विस्तार और उसके स्थानिक स्वरूप की वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान करता है।

दोनों ही परंपराएँ ब्रह्मांड को एक एकल स्रोत से उत्पन्न मानती हैं, और विस्तार को उसके विकास का आधार। जहां उपनिषदों में यह विस्तार एक आत्मिक और दार्शनिक प्रक्रिया है, वहीं आधुनिक विज्ञान इसे भौतिक और मापन योग्य प्रक्रिया के रूप में देखता है। भूगोलिक दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है कि दोनों दृष्टिकोण स्थान–काल के सृजन और उसकी गतिशीलता को स्वीकार करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि समय और स्थान की उत्पत्ति एक ही प्रकृति की प्रक्रिया हैं जो ब्रह्मांड की विविधता और विस्तार को जन्म देती हैं (Einstein, 1916; Lemaître, 1927)।

इस प्रकार, उपनिषदों की प्राचीन दार्शनिक दृष्टि और आधुनिक विज्ञान की खोजें एक साझा मंच पर आकर ब्रह्मांड की उत्पत्ति और उसकी संरचना को नई गहराई प्रदान करती हैं। जहाँ एक ओर वेदांत ब्रह्मांड को चेतना और एकत्व के स्तर पर समझने की कोशिश करता है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक भौतिकी इसे ऊर्जा, समय और स्थान के बिंदुओं से जोड़ती है। यह पारस्परिकता दर्शाती है कि ब्रह्मांडीय भूगोल की व्याख्या केवल भौतिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें आध्यात्मिक तत्व भी अंतर्निहित हैं। दोनों परंपराएँ दार्शनिक और वैज्ञानिक मिलकर एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं, जो न केवल स्थान और सृष्टि के स्वरूप को स्पष्ट करती हैं, बल्कि मानव चिंतन और ज्ञान के विकास में भी एक सेतु का कार्य करती हैं।

7. समकालीन वैज्ञानिक और धार्मिक संवाद (Contemporary Scientific and Religious Dialogue)

7.1. पोप पायस XII और बिग बैंग की धार्मिक स्वीकृति (Pope Pius XII and the Religious Acceptance of the Big Bang)

20वीं सदी के मध्य में, जब बिग बैंग सिद्धांत को वैज्ञानिक समुदाय में व्यापक मान्यता मिल रही थी, तब धार्मिक संस्थानों, विशेष रूप से कैथोलिक चर्च ने, इसे अपने धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण के साथ सामंजस्य बैठाने का प्रयास किया। पोप पायस XII ने 1951 में वेटिकन में दिए एक भाषण में यह कहा कि बिग बैंग का सिद्धांत ईश्वर द्वारा ब्रह्मांड की सृजन की पुष्टि करता है (Ferris, 1988), इस प्रकार यह पहली बार था जब किसी धार्मिक सत्ता ने विज्ञान की खोज को नकारने के बजाय, उसे अपने धर्मशास्त्रीय ढांचे में समाहित किया। यह विचार धार्मिक और वैज्ञानिक संवाद के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम था, जहाँ आध्यात्मिक दृष्टिकोण और ब्रह्मांडीय भूगोल के भौतिक मॉडल एक–दूसरे के पूरक माने गए। इस दृष्टिकोण से, ब्रह्मांड का केंद्रित आरंभ (Singularity) और समय–स्थान की उत्पत्ति एक दार्शनिक सत्य के भौतिक समकक्ष के रूप में देखे गए।

7.2. भारत में वैज्ञानिक व्याख्याएँ और धार्मिक संगति (Scientific Interpretations and Religious Harmony in India)

भारत में भी विज्ञान और धर्म के बीच समानांतर विचारों की परंपरा रही है। छांदोग्य उपनिषद में वर्णित ''सत'' से सृष्टि की उत्पत्ति (Chandogya Upanishad 6.2.1) और उसकी विस्तारशील प्रकृति को आधुनिक 'Expanding Universe' की धारणा से जोड़ा जा सकता है (Easwaran, 2007)। इस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में वैज्ञानिक खोजों को आध्यात्मिक ग्रंथों के विचारों से टकराव नहीं, बल्कि सामंजस्यपूर्ण विकास के रूप में देखा गया है। भारतीय दार्शनिक परंपराएँ विज्ञान को खंडन नहीं करतीं, बल्कि उसे उस साधन के रूप में स्वीकार करती हैं जो ब्रह्मांड और अस्तित्व की गूढ़ परतों को उद्घाटित करने में सहायक होता है। इस दृष्टिकोण के कारण ही जगदीश चंद्र बोस और सी.वी. रमन जैसे कई प्रमुख भारतीय वैज्ञानिकों ने विज्ञान और आस्था को परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक मानते हुए स्वीकार किया (Subbarayappa, 2008)।

8. निष्कर्ष

ब्रह्मांड की उत्पत्ति पर आधारित विचार, चाहे वह छांदोग्य उपनिषद में वर्णित "सत् से सृष्टि" की अवधारणा हो या आधुनिक विज्ञान का "बिग बैंग सिद्धांत", दोनों ही भूगोल के मूल प्रश्नों स्थान, समय, दिशा और विस्तार से गहराई से जुड़े हैं। उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म से सृष्टि का विस्तार, और विज्ञान में बताए गए एक बिंदु (Singularity) से ब्रह्मांड के फैलाव, दोनों ही विचार उस आरंभिक क्षण की ओर संकेत करते हैं जहाँ से सारा स्थान–काल प्रारंभ होता है। भूगोल, इन दोनों दृष्टिकोणों को एक साथ रखकर न केवल भौतिक ब्रह्मांड का मानचित्र तैयार करता है, बल्कि उसमें व्याप्त चेतना और तत्वों की गहराई को भी समझने में सहायक होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि भारतीय दर्शन और आधुनिक वैज्ञानिक सोच एक–दूसरे के विरोध में नहीं, बल्कि पूरक रूप में कार्य करते हैं। यह संगति न केवल प्राचीन और आधुनिक ज्ञान धाराओं को जोड़ती है, बल्कि ब्रह्मांडीय भूगोल को एक समग्र और बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो भविष्य में वैज्ञानिक अनुसंधानों और दार्शनिक मंथनों के बीच सेतु का कार्य कर सकती है।

सन्दर्भ सूची–

1. हम्फ्रे, आर. एल. (2015). प्राचीन हिंदू शास्त्रों और आधुनिक विज्ञान में ब्रह्मांड सृष्टि. रिवियर अकादमिक जर्नल, 11(1), लेख 3।
2. आर्मस्ट्रॉन्ग, ए. एच. (1966). प्लोटिनस–I: पोरफिरी द्वारा प्लोटिनस का जीवन और उनकी पुस्तकों का क्रम; एनेड्स I. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. आर्यभट. (499 ई.). आर्यभटीय (जैसा कि शर्मा, के. वी. (2008) में उद्धृत). आर्यभट प्रथम और खगोल विज्ञान में उनका योगदान. इंडियन जर्नल ऑफ हिस्ट्री ऑफ साइंस, 43(4), 373–388।
4. बॉलर, पी. जे. (2001). द अर्थ एन्कम्पास्डः एनवायरनमेंटल साइंसेज़ का इतिहास. डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी.
5. ब्राउन, सी. (2007). बिग हिस्ट्रीः बिग बैंग से वर्तमान तक. न्यूयॉर्करू न्यू प्रेस.
6. कैप्रा, एफ. (1982). द टर्निंग पॉइंटरू साइंस, सोसाइटी एंड द राइजिंग कल्चर. न्यूयॉर्करू साइमन एंड शूस्टर।
7. कैप्रा, एफ. (1996). द वेब ऑफ लाइफरू ए न्यू साइंटिफिक अंडरस्टैंडिंग ऑफ लिविंग सिस्टम्स. एंकर बुक्स।
8. कॉर्नफोर्ड, एफ. एम. (1937). प्लेटो की ब्रह्मांड रचनाः प्लेटो की टिमेयस. लंदनः रूटलेज एंड केगन पॉल।
9. ईस्वरान, ई. (2007). उपनिषद. नीलगिरि प्रेस।
10. आइंस्टीन, ए. (1916). सापेक्षताः विशिष्ट और सामान्य सिद्धांत. मैथुएन एंड कंपनी.
11. फेरिस, टी. (1988). कमिंग ऑफ एज इन द मिल्की वे. हार्पर एंड रो.
12. ग्रांट, ई. (1996). प्लैनेट्स, स्टार्स एंड ऑर्ब्सः द मिडिवल कॉसमॉस, 1200–1687. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. जैमिसन, एस. डब्ल्यू.,– ब्रेरेटन, जे.पी. (2014). ऋग्वेदः भारत की प्रारंभिक धार्मिक कविता (खंड 1–3). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
14. क्रैग, एच. (2007). कॉन्सेप्शंस ऑफ कॉसमॉसः मिथकों से तेजी से फैलते ब्रह्मांड तक ब्रह्मांड विज्ञान का इतिहास. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
15. क्रैग, एच. (2007). कॉस्मोलॉजी एंड कंट्रोवर्सीः ब्रह्मांड के दो सिद्धांतों का ऐतिहासिक विकास. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
16. लेमैत्रे, जी. (1927). एक समरूप ब्रह्मांड जिसकी द्रव्यमान स्थिर है और त्रिज्या बढ़ती जा रही हैः बाह्य आकाशगंगाओं की रेडियल गति का स्पष्टीकरण. एनेल्स डी ला सोसिएटे सायंटिफिक डी ब्रुसेल्स, 47, 49–59।
17. राधाकृष्णन, एस. (1953). प्रमुख उपनिषद. लंदनः जॉर्ज एलन एंड अनविन लिमिटेड।
18. राधाकृष्णन, एस. (1993). भारतीय दर्शन (खंड 1 और 2).

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

19. सुब्बारायप्पा, बी.वी. (2008). भारत में विज्ञानः एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. नेशनल बुक ट्रस्ट।
20. तैत्तिरीय उपनिषद. (तिथि अज्ञात). प्रमुख उपनिषद (स्वामी गंभीरानंद द्वारा अनूदित). अद्वैत आश्रम।